Sign in to edit and save changes to this file.

जैव उर्वरक रासायनिक के पूरक, कम लागत में अधिक फसल

मूंग एवं उड़द के बीजों को राइजोबियम कल्चर विधि अपना कर करें बुवाई-वैज्ञानिक डा. एस.बी. पाल

डॉ एस बी पाल

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 23 फरवरी। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के प्रसार निदेशालय में कार्यरत प्रसार वैज्ञानिक डॉ एस बी पाल ने जायद में दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों की उपयोगिता विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि भारत दलहनी फसलों का प्रमुख उत्पादक देश है। दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों के प्रयोग करने से वायुमंडल में उपस्थित नत्रजन पौधों को अमोनिया के रूप में सुगमता से उपलब्ध होती है। उन्होंने बताया कि जीवाणु प्राकृतिक हैं। इनके प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है तथा पर्यावरण पर विपरीत असर भी नहीं पड़ता है। उन्होंने कहाकि जैव उर्वरक रासायनिक उर्वरकों के पूरक भी हैं। डॉ पाल ने सलाह दी है कि जायद फसल में मूंग एवं उड़द की बुवाई का समय चल रहा है इसके लिए किसान भाई बुवाई के पूर्व बीजों को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करने के बाद बुवाई करें।डॉक्टर पाल ने कहा कि 10 किलोग्राम बीज के लिए एक पैकेट (दो सौ ग्राम) मूंग या उड़द के कल्चर को फसल के अनुसार लेकर आधा लीटर पानी में 50 ग्राम गुड़ या चीनी डालकर गर्म करते हैं। पानी के ठंडा होने के उपरांत राइजोबियम कल्चर मिला देते हैं। 10 किलो बीज में हाथों की सहायता से मिलाकर हवा में सूखने देते हैं। तत्पश्चात बीजों की खेत में बुवाई करते हैं। उन्होंने बताया कि प्रयोगों द्वारा सिद्ध हुआ है कि दलहनी फसलें 30 से 50 किलोग्राम तक नाइट्रोजन प्रतिवर्ष प्रति हैक्टेयर भूमि में संचित करती हैं। जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक फसल उत्पादन एवं आर्थिक लाभ होता है।

खेतों में खड़ी फसल।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:13 | अंक:32 | देहरादून, बुधवार, 23 फरवरी, 2022 | पृष्ठ:08

जैव उर्वरक रासायनिक उर्वरकों के पूरक, कम लागत में अधिक फसल उत्पादन

अनिल मिश्रा (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के प्रसार निदेशालय में कार्यरत प्रसार वैज्ञानिक डॉ एस बी पाल ने जायद में दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों की उपयोगिता विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि भारत दलहनी फसलों का प्रमुख उत्पादक देश है दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों के प्रयोग करने से वायुमंडल में उपस्थित नत्रजन पौधों को अमोनिया के रूप में सुगमता से उपलब्ध होती है।

उन्होंने बताया कि जीवाणु प्राकृतिक हैं इनके प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है तथा पर्यावरण पर विपरीत असर भी नहीं पड़ता है उन्होंने कहा जैव उर्वरक रासायनिक उर्वरकों के पूरक भी हैं डॉक्टर पाल ने सलाह दी है कि

जायद फसल में मूंग एवं उड़द की बुवाई का समय चल रहा है इसके लिए किसान भाई बुवाई के पूर्व बीजों को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करने के बाद बुवाई करें डॉक्टर पाल ने कहा कि 10 किलोग्राम बीज के लिए एक पैकेट (दो सौ ग्राम) मूंग या उड़द के कल्चर को फसल के अनुसार लेकर आधा लीटर पानी में 50 ग्राम गुड़ या चीनी डालकर गर्म करते हैं पानी के ठंडा होने के उपरांत राइजोबियम कल्चर मिला देते हैं 10 किलो बीज में हाथों की सहायता से मिलाकर हवा में सूखने देते हैं तत्पश्चात बीजों की खेत में बुवाई करते हैं उन्होंने बताया कि प्रयोगों द्वारा सिद्ध हुआ है कि दलहनी फसलें 30 से 50 किलोग्राम तक नाइट्रोजन प्रतिवर्ष प्रति हैक्टेयर भूमि में संचित करती हैं जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक फसल उत्पादन एवं आर्थिक लाभ होता है।

के राजापुर स्थित | की राजनीति में जो हो रहा है, वह | एक्सीलेंस इन वर्क मिल चुका है। | बूथों में पहुंचकर वोट की चोट कर | चौका छोड़कर सबसे पहले मतदान | उन्होंने पहले

janexpressnews janexpresslive janexpresslive

कानपुर नगर एक्सप्रेस

om/epaper | हिंदी दैनिक, जन एक्सप्रेस। | लखनऊ । गुरुवार । 24 फरवरी 2022

दलहनी फसलों का प्रमुख उत्पादक देश है 'भारत'

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय में कार्यरत प्रसार वैज्ञानिक डॉ. एस. बी. पाल ने जायद में दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों की उपयोगिता विषय पर किसानों के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि भारत दलहनी फसलों का प्रमुख उत्पादक देश है दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों के प्रयोग करने से वायुमंडल में उपस्थित नत्रजन पौधों को अमोनिया के रूप में सुगमता से उपलब्ध होती है। उन्होंने बताया कि जीवाणु प्राकृतिक हैं जिसके प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है तथा पर्यावरण पर विपरीत असर नहीं पड़ता है। उन्होंने कहा कि जायद फसल में मूंग एवं उड़द की बुवाई का समय चल रहा है इसके लिए किसानो को बुवाई से पहले बीजों को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करना चाहिए ।डॉ.पाल ने कहा कि 10 किलोग्राम बीज के लिए एक पैकेट(दो सौ ग्राम) मूंग या उड़द के कल्चर को फसल के अनुसार लेकर आधा लीटर पानी में 50 ग्राम गुड़ या चीनी डालकर गर्म करते हैं तथा पानी के ठंडा होने के बाद राइजोबियम कल्चर मिला देते हैं। 10 किलो बीज में हाथों की सहायता से मिलाकर हवा में सूखाकर बीजों की खेत में बुवाई करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि प्रयोगों द्वारा सिद्ध हुआ है कि दलहनी फसलें 30 से 50 किलोग्राम तक नाइट्रोजन प्रतिवर्ष प्रति हैक्टेयर भूमि में संचित करती हैं। जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक फसल उत्पादन एवं आर्थिक लाभ होता है।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpres

WORLD खबर EXPRESS

बुधवार, 23-02-2022 अंक-53
www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

WORLD
खबर एक्सप्रेस
MID DAY E-PAPER

जैव उर्वरक से बढ़ती भूमि की उर्वरक शक्ति

डॉ. एसबी पाल ने किसानों के लिए जारी की एडवाइजरी

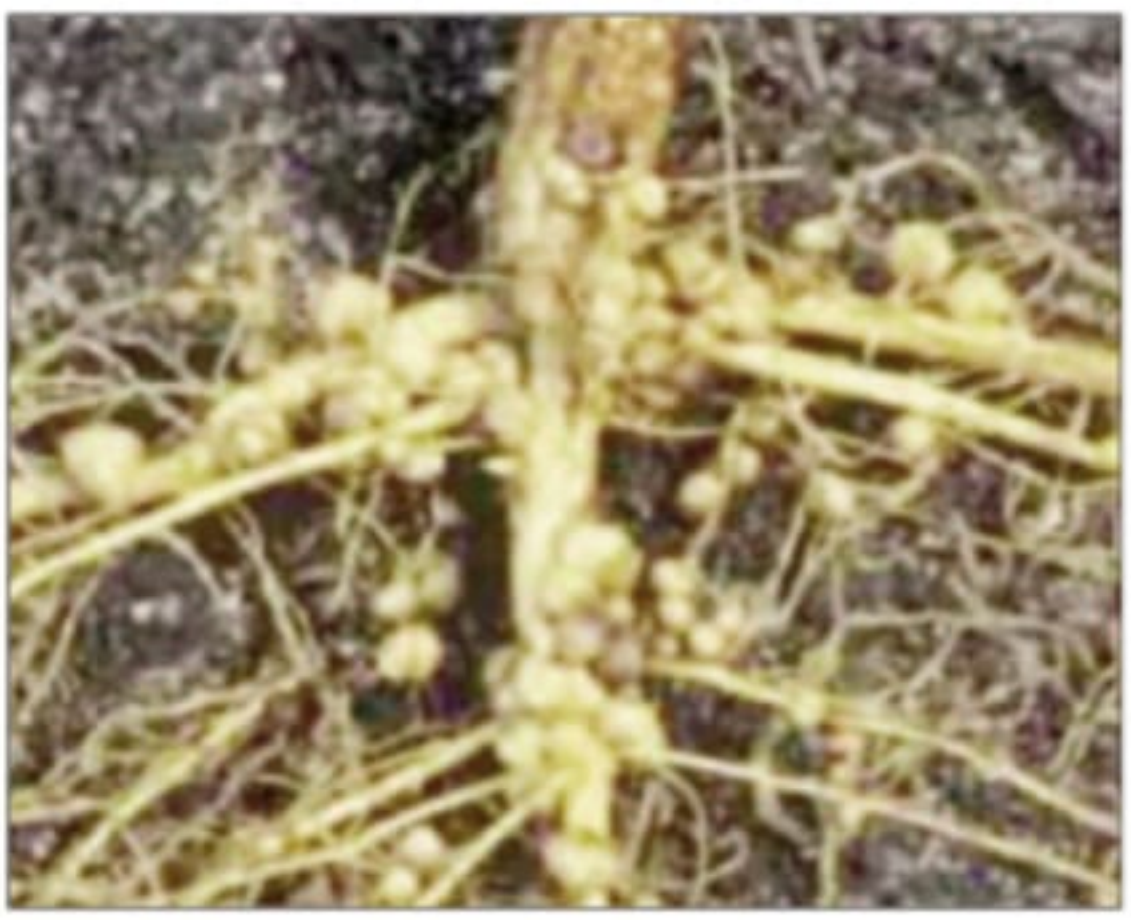

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के प्रसार निदेशालय में कार्यरत प्रसार वैज्ञानिक डॉ. एसबी पाल ने जायद में दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों की उपयोगिता विषय पर किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि भारत दलहनी फसलों का प्रमुख उत्पादक देश है। दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों का प्रयोग करने से वायुमंडल में उपस्थित नाइट्रोजन पौधों को अमोनिया के रूप में सुगमता से उपलब्ध होती है।

उन्होंने बताया कि जीवाणु प्राकृतिक होते हैं। इनके प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है तथा पर्यावरण पर विपरीत असर भी नहीं पड़ता है। उन्होंने कहा जैव उर्वरक रासायनिक उर्वरकों के पूरक भी हैं। डॉ. पाल ने सलाह दी है कि जायद फसल में मूंग एवं उड़द की बुवाई का समय चल रहा है। इसके लिए किसान बुवाई के पूर्व बीजों को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करने के बाद बुवाई करें। डॉ. पाल ने कहा कि 10 किलोग्राम बीज के लिए एक पैकेट (दो सौ ग्राम) मूंग या उड़द के कल्चर को फसल के अनुसार लेकर आधा लीटर पानी में 50 ग्राम गुड़ या चीनी डालकर गर्म करते हैं। पानी के ठंडा होने के उपरांत राइजोबियम कल्चर मिला देते हैं। 10 किलो बीज में हाथों की सहायता से

मिलाकर हवा में सूखने देते हैं। इसके बाद बीजों की खेत में बुवाई करते हैं। उन्होंने बताया कि प्रयोगों द्वारा सिद्ध हुआ है कि दलहनी फसलें 30 से 50 किलोग्राम तक नाइट्रोजन प्रतिवर्ष प्रति हैक्टेयर भूमि में संचित करती हैं। जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक फसल उत्पादन एवं आर्थिक लाभ मिलता है।

अमर उजाला कानपुर 24/02/2022

बीजों को शोधित करने के बाद करें बुआई

कानपुर। सीएसए के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. एसबी पाल ने बुधवार को जायद में दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों की उपयोगिता के संबंध में एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि मूंग एवं उड़द की बुआई का समय चल रहा है। किसान बुआई के पहले बीजों को राइजोबियम कल्चर से शोधित कर लें। (संवाद)